

स्टेट ऑफ फूड एंड एग्रीकल्चर 2024

प्रलिस के लयि:

[खाद्य और कृषि संगठन, संयुक्त राष्ट्र, गैर-संचारी रोग, गरीनहाउस गैस उत्सर्जन, सतत विकास लक्ष्य, कृषि विकास के लयि अंतरराष्ट्रीय कोष, सतत कृषि के लयि राष्ट्रीय मशिन, 'ईट राइट' पहल](#)

मेन्स के लयि:

खाद्य सुरक्षा, कृषि खाद्य प्रणालयिँ और स्थरिता, भारत की कृषि खाद्य प्रणाली और प्रचछन्न लागत

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

चर्चा में क्योँ?

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (AFO) की स्टेट ऑफ फूड एंड एग्रीकल्चर 2024 रिपोर्ट क्वे अनुसार, अस्वास्थ्यकर आहार (अनहेल्दी डाइट) पैटर्न और पर्यावरण कषरण वैश्विक वैश्विक कृषि खाद्यान्न की प्रचछन्न लागत के मुख्य कारण हैं, जो कुल मलाकरलगभग 12 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर प्रतविरष है।

- यह रिपोर्ट अकसर नजरअंदाज़ कयि जाने वाले उन कारकोँ की जाँच करती है जो इन लागतोँ में योगदान करते हैं, तथा वैश्विक कृषि खाद्य प्रणालयिँ में परिवर्तन का आग्रह करती है।

नोट: प्रचछन्न लागतेँ उन आर्थिक बोझोँ को संदर्भति करती हैं जो खाद्य उत्पादोँ के बाज़ार मूल्य में परलिकषति नहीं होती हैं। इनमें वर्तमान कृषि खाद्य प्रणाली से उत्पन्न स्वास्थ्य लागत, पर्यावरण कषरण और सामाजिक असमानताएँ शामिल हैं।

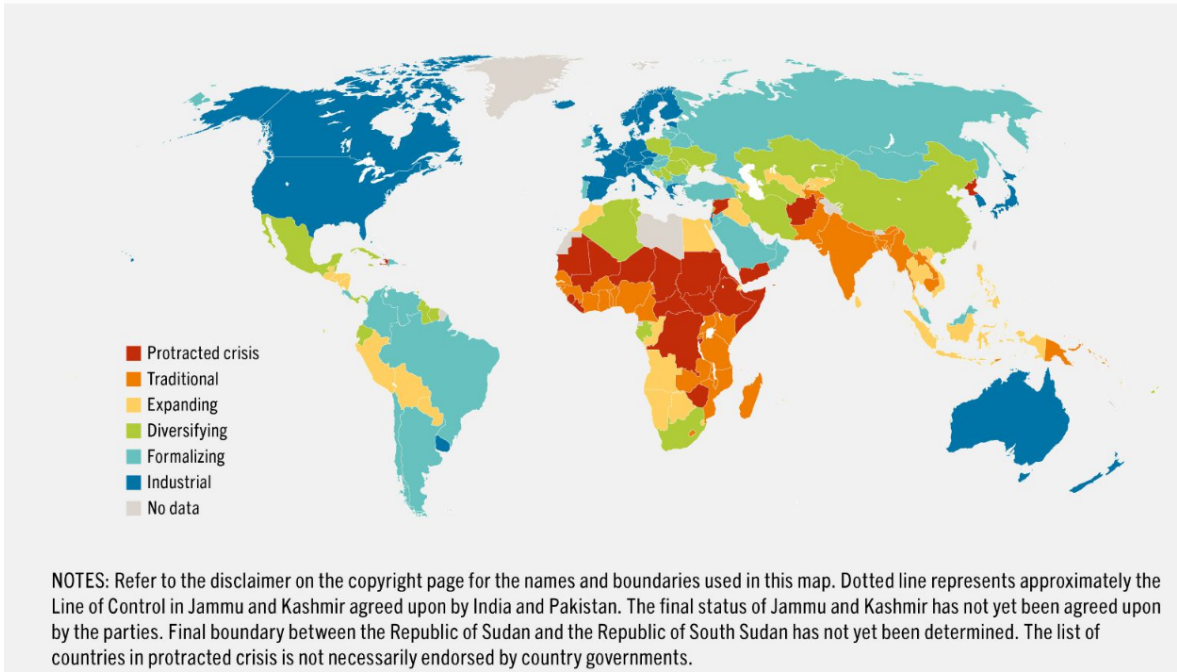
स्टेट ऑफ फूड एंड एग्रीकल्चर 2024 की मुख्य वशिषताएँ क्या हैं?

- प्रचछन्न लागतेँ: कृषि खाद्य प्रणालयिँ की प्रचछन्न लागतेँ प्रतविरष लगभग 12 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच जाती हैं।
 - इन लागतोँ का 70% (8.1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर) अस्वास्थ्यकर आहार पैटर्न और हृदय रोग, स्ट्रोक और [मधुमेह जैसे गैर-संचारी रोगोँ \(NCD\)](#) से संबंधति है।
- भारत पर अंतरदृष्टि: भारत की प्रचछन्न लागत, कुल 1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो वशि्व स्तर पर चीन (1.8 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर) और संयुक्त राज्य अमेरिका (1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर) के बाद तीसरी सबसे बड़ी लागत है।
- ये लागतेँ कृषि-खाद्य प्रणाली से जुड़ी महत्वपूर्ण स्वास्थ्य, सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतयिँ को दर्शाती हैं।
 - इनमें से 73% से अधिक लागत आहार संबंधी जोखिमोँ, जैसे प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थोँ का अधिक और पौधे-आधारति खाद्य पदार्थोँ का कम सेवन, से उत्पन्न होती हैं।
 - प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थोँ और योजकोँ के अत्यधिक उपभोग से भारत को प्रतविरष 128 बलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान होता है, जसिका मुख्य कारण हृदय रोग, स्ट्रोक और मधुमेह जैसी बीमारयिँ हैं।
 - भारत में पादप-आधारति खाद्य पदार्थोँ और लाभकारी फ़ैटी एसडिँ के अपर्याप्त उपभोग से 846 बलियन अमेरिकी डॉलर की प्रचछन्न लागत बढ़ जाती है, जसिसे स्वास्थ्य देखभाल प्रणालयिँ पर और अधिक बोझ पड़ता है।
 - कृषि खाद्य प्रणाली में वतिरण संबंधी वफिलताओँ के कारण कृषि खाद्य श्रमकोँ के बीच कम मज़दूरी और कम उत्पादकता और भी बदतर हो गई है, जसिके कारण भारत में गरीबी बढ़ रही है।
- कृषि खाद्य प्रणाली के अनुसार प्रचछन्न लागतेँ: रिपोर्ट में कृषि खाद्य प्रणालयिँ को छह प्रकारोँ में वर्गीकृत कयि गया है- ये हैं दीर्घकालिक संकट, पारंपरिक, वसितार, वविधीकरण, औपचारकीकरण और औद्योगिक, जनिमें से प्रत्येक की अपनी अलग प्रचछन्न कॉस्ट प्रोफाइल है।
 - अधिकांश प्रणालयिँ में, [साबुत अनाज, फलोँ और सबजयिँ का कम सेवन प्राथमिक आहार जोखिम है।](#) हालाँकि, दीर्घकालिक संकट

और पारंपरिक प्रणालियों जैसी प्रणालियों में, **फलों और सब्जियों का कम सेवन** एक बड़ी चिंता का विषय है।

- पारंपरिक से औपचारिक प्रणालियों की ओर सोडियम सेवन में वृद्धि होती है, औपचारिक प्रणालियों में यह चरम पर होता है तथा औद्योगिक प्रणालियों में घटता है।
- अधिक औद्योगिक प्रणालियों में प्रसंस्कृत और लाल मांस की खपत में लगातार वृद्धि हो रही है।

FIGURE 1 GLOBAL MAP OF THE AGRIFOOD SYSTEMS TYPOLOGY



- **पर्यावरणीय और सामाजिक लागत: असंवहनीय कृषि पद्धतियों, विशेषकर कृषि खाद्य प्रणालियों में विविधता लाने से महत्वपूर्ण पर्यावरणीय लागत उत्पन्न होती है, जिसमें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और नाइट्रोजन अपवाह जैसी लागतें 720 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच जाती हैं।**
 - लंबे समय से संकट का सामना कर रहे देशों को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 20% तक की महत्वपूर्ण सापेक्ष पर्यावरणीय लागत वहन करनी पड़ती है।
 - पारंपरिक तथा दीर्घकालिक संकट प्रणालियों को सबसे अधिक सामाजिक लागतों का सामना करना पड़ता है, जिसमें गरीबी और अल्पपोषण शामिल हैं, जो इन कृषि क्षेत्रों में सकल घरेलू उत्पाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है (8% से 18%)।
- **परिवर्तनकारी बदलाव के लिये सफ़िराशियाँ:**
 - **वास्तविक लागत लेखांकन:** प्रचलित लागतों को बेहतर ढंग से पकड़ने और नरिणय लेने में सहायता करने के लिये वास्तविक लागत लेखांकन को लागू करना।
 - **स्वास्थ्यवर्धक आहार:** स्वास्थ्य संबंधी प्रचलित लागतों को कम करते हुए पौष्टिक भोजन को अधिक कफ़ायती और सुलभ बनाने की नीतियाँ।
 - **स्थिरता प्रोत्साहन:** सतत प्रथाओं को अपनाने तथा उत्सर्जन को कम करने के लिये वित्तीय और नयामक प्रोत्साहन प्रदान करना।
 - **उपभोक्ता सशक्तीकरण:** उपभोक्ता व्यवहार को नरिदेशित करने के लिये खाद्य विकल्पों के पर्यावरणीय, सामाजिक और स्वास्थ्य प्रभावों पर स्पष्ट एवं सुलभ जानकारी।
 - **सामूहिक कार्रवाई का महत्त्व:** प्रणालीगत परिवर्तन लाने के लिये कृषि व्यवसायों, सरकारों, वित्तीय संस्थाओं, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और उपभोक्ताओं के बीच सहयोग का आह्वान।
 - **सतत विकास लक्ष्यों (SDG)** को प्राप्त करने तथा खाद्य सुरक्षा, पोषण और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिये वैश्विक कृषि खाद्य प्रणालियों में परिवर्तन आवश्यक है।

कृषि खाद्य प्रणालियाँ

- FAO कृषि-खाद्य प्रणालियों को इस रूप में परिभाषित करता है कि इसमें **कृषि उत्पादन से लेकर प्रसंस्करण, वितरण और अपशिष्ट प्रबंधन सहित खाद्य उपभोग तक की सभी गतिविधियाँ शामिल हैं।**
 - ये प्रणालियाँ आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होती हैं, जो खाद्य उत्पादन, वितरण एवं उपभोग को प्रभावित करती हैं।
- **तीव्र शहरीकरण** और बदलती आहार संबंधी प्राथमिकताओं के कारण कृषि खाद्य प्रणालियाँ अब ऐसे दबावों का सामना कर रही हैं जो उनकी स्थिरता तथा पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की क्षमता को चुनौती दे रहे हैं।

भारत SFS की दशा में कैसे कार्य कर रहा है?

- FAO के अनुसार, एक सतत खाद्य प्रणाली (SFS) भावी पीढ़ियों के लिये खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु **आर्थिक लाभप्रदता, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाती है।**
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) 2013** 800 मिलियन से अधिक नागरिकों को खाद्यान्न का अधिकार प्रदान करता है, जो खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- **SFS के लिये भारत की पहल:**
 - [राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन \(NMSA\)](#)
 - [फोर्टफाइड राइस वतिरण \(2024-2028\)](#)।
 - [राष्ट्रीय कृषि विकास योजना \(RKVY\)](#)
 - [ईट राइज पहल](#)
 - [डिजिटल कृषि मिशन \(DAM\)](#)

SFS में भारत की चुनौतियाँ क्या हैं?

- **जलवायु परिवर्तन:** हाल के वर्षों में, भारत मौसम के बदलते पैटर्न, अनियमित वर्षा और **चरम घटनाओं (अनावृष्टि, बाढ़ एवं हीट वेव)** का सामना कर रहा है, जिससे फसल की पैदावार और खाद्य सुरक्षा प्रभावित हो रही है।
- **पर्यावरण क्षरण:** रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मृदा क्षरण, जल प्रदूषण तथा जैव विविधता को नुकसान हो सकता है।
 - प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित प्रमुख चुनौतियों में **घटती पैदावार, मृदा उर्वरता, मृदा कार्बनिक कार्बन (SOC) का स्तर और जल की कमी शामिल हैं।**
- **असंगत घटक सीमाएँ:** प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में शर्करा और नमक जैसे घटकों की सीमा में भारतीय मानकों तथा **वशिव स्वास्थ्य संगठन (WHO)** द्वारा निर्धारित मानकों के बीच असंगतता है।
 - यह वसिंता प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की पोषण गुणवत्ता को वनियमित करने और सुनिश्चित करने के प्रयासों को जटिल बनाती है तथा **आहार-संबंधी बीमारियों को कम करने के उद्देश्य से कथि गए सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों को संभावित रूप से कमजोर करती है।**
- **स्वच्छता और पादप स्वच्छता मानक:** भारत के कृषि-नरियात को कभी-कभी गुणवत्ता संबंधी मुद्दों के कारण प्रमुख बाजारों में अस्वीकार कर दिया जाता है, जिससे मानकों में सुधार की आवश्यकता उजागर होती है।
- **कम उत्पादकता और आय:** भारतीय किसानों का एक बड़ा हस्सिा **छोटी जोत का मालकि** है, जो उनकी उत्पादकता और आय को सीमित करता है।
 - कई किसान पुरानी पद्धतियों पर नरिभर रहते हैं, जिसके कारण उपज कम होती है और संसाधनों का अकुशल उपयोग होता है।
- **सीमति व्यापार सहयोग:** भारत के व्यापार समझौतों में SFS पर पर्याप्त चर्चा का अभाव है, जिससे मानकों पर आपसी समझौतों के माध्यम से विकास के अवसर कम हो रहे हैं।
- **नरियात रणनीति और डेटा का अभाव:** SFS-संरखति व्यापार योजना का समर्थन करने के लिये उत्पाद-वशिषिट नरियात रणनीतियों और व्यापक डेटा का अभाव है।

भारत में संधारणीय और समावेशी SFS के लिये क्या आवश्यक है?

- **संधारणीय प्रथाएँ:** संधारणीय जल उपयोग, मृदा स्वास्थ्य बहाली और पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाना।
- **छोटे किसानों के लिये सहायता:** हाशिये पर पड़े किसानों के लिये वतितीय सेवाओं, प्रौद्योगिकी और बाजारों तक पहुँच बढ़ाना।
- **फार्म-टू-फोर्क ट्रेसेबिलिटी को लागू करना:** खाद्य आपूर्ति शृंखला में गुणवत्ता, सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिये उत्पाद ट्रेसेबिलिटी महत्त्वपूर्ण है।
- **अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ सहयोग:** FAO, **अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास कोष**, **वशिव खाद्य कार्यक्रम (WFP)** और भारत सरकार कृषि सुधारों को बढ़ावा देते हैं तथा शकिषा, प्रौद्योगिकी एवं वतितीय संसाधनों के माध्यम से छोटे किसानों को समर्थन देते हैं।
- **गुणवत्ता परीक्षण और प्रमाणन को बढ़ावा देना:** परीक्षण और प्रमाणन प्रक्रियाओं के माध्यम से गुणवत्ता नयित्रण को मज़बूत करने से भारतीय कृषि उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करने में सहायता मिलेगी।
- **सामाजिक सुरक्षा जाल को मज़बूत करना:** गैर-कृषि परिवारों का समर्थन करने के लिये, खाद्य वतिरण प्रणालियों को वहनीयता और पहुँच सुनिश्चित करने के लिये कुशल होना चाहिये।

नषिकर्ष

भारत को अपनी कृषि खाद्य प्रणाली में असवास्थ्यकर आहार और पर्यावरण क्षरण के कारण महत्त्वपूर्ण प्रचछन्न लागतों का सामना करना पड़ रहा है। हालाँकि प्रगति हुई है, लेकिन जलवायु परिवर्तन, नरियात प्रतिबंध और कम उत्पादकता जैसी चुनौतियाँ प्रगति में बाधा डालती हैं। सतत प्रथाओं, छोटे किसानों के लिये समर्थन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने वाला एकसमग्र दृष्टिकोण वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों के साथ संरखति अनुकूलन तथा समावेशी कृषि खाद्य प्रणाली बनाने के लिये महत्त्वपूर्ण है।



प्रश्न: भारत की कृषि खाद्य प्रणाली का मूल्यांकन कीजिये और प्रमुख प्रयत्न लागतों की पहचान कीजिये। भारत सतत खाद्य प्रणाली प्राप्त करने के लिये इन चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????:

प्रश्न. FAO, पारम्परिक कृषि प्रणालियों को 'सार्वभौम रूप से महत्त्वपूर्ण कृषि विरासत प्रणाली [Globally Important Agricultural Heritage System (GIAHS)]' की हैसियत प्रदान करता है। इस पहल का संपूर्ण लक्ष्य क्या है? (2016)

1. अभनिरिधारति GIAHS के स्थानीय समुदायों को आधुनिक प्रौद्योगिकी, आधुनिक कृषि प्रणाली का प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता प्रदान करना जसिसे उनकी कृषि उत्पादकता अत्यधिक बढ़ जाए
2. पारतिंत्र-अनुकूली परम्परागत कृषि पद्धतियों और उनसे संबंधति परदृश्य (लैंडस्केप), कृषि जैव विविधता और स्थानीय समुदायों के ज्ञानतंत्र का अभनिरिधारण एवं संरक्षण करना
3. इस प्रकार अभनिरिधारति GIAHS के सभी भनि-भनि कृषि उत्पादों को भौगोलिक सूचक (जओग्राफिकल इंडिकेशन) की हैसियत प्रदान करना

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (B)

??????:

प्रश्न. एकीकृत कृषि प्रणाली (आइ० एफ० एस०) कसि सीमा तक कृषि उत्पादन को संधारति करने में सहायक है? (2019)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/state-of-food-and-agriculture-2024>